

समानुभूतिया परानुभूति

परिचय

किसी व्यक्ति की किसी अल्प व्यक्ति, पाणि या किसी काल्पनिक चरित्र की मनःरिखितियाँ जो सारी रूप में समझने की शक्ति। अवश्य समानुभूति के बाहर दूरी की मनःरिखितियाँ की समझने की शक्ति नहीं अपितु उन्हीं शावकारों को उस स्तर पर महसूस करना लिखा रखा पर उन्हें मूल व्यक्ति ने अनुभव किया। इसका चरण वहाँ दिखता है जहाँ व्यक्ति की चेतना में 'द्वा' तथा 'पर' का अंतर मिटने लगता है।

समानुभूति एवं सहानुभूति

अगर समानुभूति को किंचिं संज्ञानामक स्तर पर समझें जहाँ व्यक्ति दूरी की पीड़ा को देखकर दूरी होता है और चाहता है कि उक्ती पीड़ा दूर हो। दूसरी ओर एक व्यक्ति दूरी की मनःरिखिति की इस प्रकार समझता है कि 'द्वा' और 'पर' का ब्रेद खत्म हो जाए। समानुभूति, सहानुभूति का ही अनुभव है। समानुभूति में जब शावकारक स्तर भी शामिल हो जाए तो उसे सहानुभूति कहते हैं।

समानुभूति के प्रकार

समानुभूति को संज्ञानामक समानुभूति तथा शावकारमक (Affective/Emotive) में बाँट जाय।

समानुभूति जो दो आरों में विभाजित किया गया-

परिचयक गति (Perspective)

किसी व्यक्ति के व्यवहार को समझने की शक्ति।

कथ्यता (Font art)

किसी कार्यिक चित्र की परिदिखितियों को समझने की शक्ति।

शावकारमक समानुभूति

समानुभूतिक चिंता (Empathic Concern)

व्यक्ति पीड़ित ही दिखति में जल्द सुधार चाहता है, हर तरह का सहायण।

समानुभूतिक तनाव (Empathic Distress)

यह चिंता की तीव्रता की तरह है। तीव्रता इन्हीं

आरीक की सामाजिक जीवनियां परिवर्तन करते।

समानुभूति का विकास

पाठ्यक्रम-प्राप्ति
वर्षों में शावकारक संवेदनशीलता का विकास
बहुत हुद तक बच्चों पर विभर।

शावकारमक कहानियाँ जो किसी के दुख-दर्द
को व्यक्त करती हैं।

स्फूल तथा कॉलेज

स्फूल व कॉलेज में ऑडियो-विजुअल डेवलोपरी तथा फिल्मों आदि के माध्यम से विशिष्ट समव्याङ्कों से गहरा व्यक्तियों या समूहों की दिखति को प्रवर्द्धित करके छारों में समानुभूति का विकास किया जा सकता है।

कुछ ऐसे समूहों से बच्चों को ग्रिलवाना जो पीड़ित हैं।

बच्चों के मध्य डाइवर्सिटी की लीति लगू करना ताकि वे दूरी समूहों के साथ अधिक-से-अधिक अंतरिक्षाकर सकें तथा इन व्यवहारों से मुक्त हो सकें।

जिन व्यवहारों में दूरी की अनुभूतियों या मनःरिखिति को व्यावहारिक रूप से समानुभूति जैसे गुणों के विकास पर बल दिया जाएगा, जैसे- नर्स, डीचिंग।

समानुभूति या परानुभूति

कुछ शोध परिणाम

- दो सर्व की ऊपर समानुभूति का विकास नहीं होता।
- दो से 7 वर्ष की ऊपर समानुभूति का विकास कम।
- सात के बाद विकास होता रहता है।
- ट्रेनिंग देकर भी इसका विकास किया जा सकता है।
- महिलाओं में पुरुषों की तुलना में समानुभूति का स्तर ऊँचा।
- ऊपर समानुभूति की शक्ति बढ़ जाती है।

सहिष्णुता

शाविक अर्थ साझा करना है।

सहिष्णुता का अर्थ है जिस व्यक्तियों की आदर्श, विचार, वर्ष, धर्मीयता आदि से व्यक्ति विज्ञ या विटी ही मत रखता है तो भी भी उनके प्रति व्यायामूर्त तथा समानवूर्ध अंतिमिति बनाए रखना चाहिए जो किसी भी प्रकार की आक्रमणकारी भी बचना।

सहिष्णुता का सम्मान करना उन्हें सुनने, समझने तथा तार्किक रूप से सही होने पर सहीकार करना है।

दर्तावार में सहिष्णुता की आवश्यकता के बाहर रखना चाहिए जिसका अर्थ है कि व्यापक अर्थ में विशेषियों के विचारों का सम्मान करना, उन्हें सुनने, समझने तथा तार्किक रूप से सही होने पर सहीकार करना है।

लग

विशेषी विचारों को सुनने की ताकत हो तो समाज और दैनिकीति दोनों लोकतांत्रिक बनते हैं।

- कई बात वैरिएरिक सुनने से जरूर विचार पापत होते हैं।
- अगर व्यक्ति वैरिएरिक व्यवहार करता है तो इसके इस बात की भी प्रेरणा मिलती है कि वह अल्प के प्रति सहिष्णु व्यवहार करते हैं।
- इससे विचार व अंतिमिति को बढ़ावा मिलता है।